यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

# श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

## जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2023

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

**प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम**

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

**नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।**

---

**प्रश्न 1. जोड़ी मिलाइये-** 1x5=5

1. नम्रवृत्ति - ऋजुता .....
2. परिग्रह का त्याग - वैमानिक देव .....
3. निन्दना - उच्चगौत्र .....
4. बोधि के लोभ - करणगुणश्रेणि .....
5. माया विजय - अतिदुष्कर .....

**प्रश्न 2. संख्या में उत्तर दीजिए-** 1x5=5

1. अनुप्रेक्षा से जीव को क्या प्राप्त होता? यह प्रश्न का संख्या लिखिए? .....
2. ऋजुता से जीव कितने गुणो को प्राप्त करता है? .....
3. स्वाध्याय के कितने भेद- .....
4. मानसिक वेदनाओ को मृगापुत्र भूतकाल में कितनी बार सहन किया? .....
5. एक साथ एक आत्मा में कितने परिषह तक विकल्प से संभव है? .....

**प्रश्न 3. अर्थ पढ़कर गाथा लिखिए?** 5

1. आयुष्यकर्म की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम है?

.....

2. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग ये पाँच बंध के हेतु है?

.....

3. तप से निर्जरा और संवर दोनो होता है?

.....

4. पूर्व के प्रयोग से, संघ के अभाव से बंधन के टूटने से और गति मोक्षार्थ होने वाली गति के परिणाम से मुक्त जीव ऊँचा होता है?

.....

5. केवलज्ञानी, श्रुत, संघ, धर्म और देव का अवर्णवाद दर्शनमोहनीय कर्म का बंध हेतु है?

.....

6. प्रतिपुच्छना से जीव सूत्र, अर्थ और तदुभय को विशुद्ध कर लेता

.....

7. प्रहलादभाव से सम्पन्न साधक सर्व प्राणो, भूतो, जीवों और सत्वों के प्रति मैत्रीभाव को प्राप्त होता है?

.....

8. तप से जीव व्यवदान-विशुद्धि प्राप्त करता है?

.....

9. मन को एकाग्रता में स्थापित करने से चित्त का निरोध होता है?

.....

10. भंते! उपधि के प्रत्याख्यान से जीव को क्या उपलब्धि होती है।

.....

**प्रश्न 4. सही गलत निशान लगाइये-** **5**

1. काल की प्रतिलेखना से जीव आयुष्यकर्म का क्षय करता है? ( )
2. वैयावृत्य से जीव अनेक सैकड़ो भवों का निरोध कर लेता है? ( )
3. भावसत्य से जीव यथाकारी तथाकारी होता है- ( )
4. उग्र ब्रह्मचर्य महाव्रत को धारण करना अत्यन्त दुष्कर कार्य है? ( )
5. जैसे महानाग कचुली का परित्याग कर देता है उसी प्रकार मृगापुत्र ने कषाय को त्याग दिया- ( )
6. मुनि रोगोत्पत्ति होने पर चिकित्सा नहीं करने वाला ऊर्ध्व दिशा को प्रयाण करता है- ( )
7. श्रमण मृगापुत्र ने एक मासिक अनशन से सवार्थ सिद्ध विमान प्राप्त की ( )
8. अवमौदर्य बाह्य तप के अन्तर्गत आता है- ( )
9. 6 प्रकार के निर्ग्रन्थ है ( )
10. विनय के चार भेद है- ( )

**प्रश्न 5. प्रश्नों का उत्तर दीजिए–** **15**

1. प्रथम अर्त्तध्यान किसे कहते है?

.....

2. मुक्त जीव कैसे ऊंचा जाता है?

.....

3. तिर्यंच आयु, नरकायु के बंध हेतु क्या है?

.....

4. सम्यक् दर्शन के पांच अतिचार कौन–कौनसा?

.....

5. अतिथि संविभाग व्रत के कोई 3 अतिचार लिखिए?

.....

6. कषाय के प्रत्याख्यान से जीव क्या प्राप्त करता है?

.....

7. सर्वगुणसम्पन्नता से जीव क्या प्राप्त करता है?

.....

8. योगसत्य से जीव क्या प्राप्त करता है?

.....

9. ऋजुता को प्राप्त जीव कौनसा कषाय पर विजय प्राप्त करता है?

.....

10. सिद्धों को अतिशय गुणों का सम्पादन करने के लिए जीव क्या करता है?

.....

11. अन्तःकरण की वृत्ति का निरोध कितने समय पर्यन्त दिखायें रखता है?

.....

12. धर्मध्यान कौनसा गुणस्थान तक संभव है?

.....

13. दस प्रकार का उत्तम धर्म में कोई 4 लिखिए?

.....

14. सूक्ष्म सम्पराय और छद्मस्थ वीतराग में कितने परिषह संभव है? कोई परिषह का नाम लिखिए?

.....

15. पांच प्रकार के निर्ग्रन्थ का नाम लिखिए?

.....

**प्रश्न 6. अर्थ लिखिए –** **5**

1. निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं।
भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेणं दुक्करं।

.....

.....

.....

2. कुहाड–फरसुमाईहिं वड्ढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओ य अणन्तसो।

.....

.....

.....

3. तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं।

.....

.....

.....

.....

4. परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोदभावने च नीचैर्गोत्रस्य।।
तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौचोन्तरस्य ।

.....

.....

.....

5. गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो
जोगेहिंतो नियत्तेइ। पसत्थजोग–पडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघइपज्जवे खवेइ।

.....

.....

.....

6. कउस्सगेणं ऽतीय–पडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे
निव्वुयहियए ओहरियभारो व्व भारवहे, पसत्थज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ।।

.....

.....

.....

.....

7. पडिपुच्छणयाए णं सुत्तऽत्थतदुभयाइं विसोहेइ।
कंखमोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ।।

.....

.....

.....

8. सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावित्तिं जणयइ। अपुणरावित्तिं पत्तए य णं जीवे
सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ।

.....

.....

.....

9. मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ।

.....

.....

.....

10. सोइन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागद्दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं
कम्मं न बन्धइं, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

.....

.....

.....

**प्रश्न 7. रिक्त स्थान की पूर्ति किजिए–** **5**

1. चरित्तसंपन्नयाए णं ..... जणयइ।
2. ..... मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु।।
3. एगग्गं जणइत्ता ..... जणयइ।
4. गुरु ..... जीवे किं जणयइ।।
5. उज्जुभावपडिवन्ने य णं ..... न बन्धइ।।
6. सकषायाकषाययोः ..... ।।
7. ..... चापायावद्यदर्शनम्।।

8. योगवक्रता ..... नाम्नः।।

9. मारणान्तिकीं ..... जोषिता।।

10. अनुग्रहार्थं ..... दानम्।।

11. जन्म दुःखरूप है, ..... दुःखरूप है, ..... और ..... भी दुःखरूप हैं।

12. जातिस्मरण ज्ञान ..... के धारक ..... का स्मरण हुआ।

13. जो व्यक्ति ..... लिये बिना लम्बे मार्ग पर चल देता है, वह चलता हुआ.....और ..... से पीड़ित होकर दुःखी होता है।

14. निरन्तर ..... युक्त होकर ..... बोलना।

15. ..... को तराजू से तोलना दुष्कर है,

**प्रश्न 8. अशुद्ध को हटाओ–** **10**

1. प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशद्रव्यस्तद्विधय संबंधः।

.....

2. नारक चारित्रमोह मानुषदैवानि।

.....

3. अल्पपरिग्रहारम्भहत्वं, स्वभावमार्दवार्जवं च देवस्य।

.....

4. सकषायाः द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः इर्यापथयो साम्परायिकः।

.....

5. क्रोधमायालोभामान हास्यरत्यशोक भय रति जुगुप्सा स्त्री पुं नपुंसकवेदाः।।

.....

.....